6 मालवजी फौज़दार

प्रस्तुत एकांकी में एक छोटे बालक मालवजी फौज़दार की निर्भयता, प्रतिज्ञापालन, कर्तव्य भावना और मातृप्रेम प्रस्तुत किया गया है। साथ में मराठा साम्राज्य के महाराजा छत्रपति शिवाजी की उदारता और राष्ट्रप्रेम को उजागर किया गया है। शिवाजी महाराज के सेनानायक तानाजी की स्वामीभक्ति को भी प्रस्तुत किया गया है।

(पात्र : शिवाजी, मालवजी, तानाजी, दरबान)

पहला दृश्य

स्थान – शिवाजी का शयन-कक्ष।

[एक सुसज्जित कमरे में शिवाजी एक पलंग पर सो रहे हैं। सामने भवानी का चित्र लटक रहा है। पास ही किशोर आयु का मालवजी हाथ में नंगी तलवार लिए हुए शिवाजी की हत्या करने के लिए तत्पर है। शिवाजी एक भयानक स्वप्न देखकर अचानक आँखे मलते उठ बैठते हैं। मालवजी उन पर वार करता है। पीछे से तानाजी आकर उसका हाथ पकड़ लेते हैं। शिवाजी प्रेम भरी दृष्टि से तानाजी की ओर देखते हैं।]

शिवाजी – (आश्चर्य करते हुए) तुम कौन हो, वत्स?

बालक – (वीरतापूर्वक) मेरा नाम मालवजी है।

शिवाजी – (गंभीर स्वर में) मालवजी, जानते हो, इस अपराध के लिए तुम्हें क्या दंड भोगना होगा?

मालवजी – (निर्भयतापूर्वक) मृत्यु।

शिवाजी – मृत्यु-दंड पाने से पहले तुमको मुझे एक बात बतानी होगी।

मालवजी – वह क्या?

शिवाजी – तुम्हारी बातों और चाल-ढाल से जान पड़ता है कि तुम वीर पुत्र हो, सत्यवादी हो। इससे मुझे आशा है कि तुम झूठ नहीं बोलोगे।

मालवजी – जो बात सत्य है, उसे मैं अवश्य बता दूँगा। इसमें छिपाने की क्या बात है?

शिवाजी – युवक! मुझे मार कर क्या मराठा साम्राज्य के मालिक बनना चाहते थे?

मालवजी – नहीं।

शिवाजी – क्या मैंने तुम्हें कोई हानि पहुँचाने की चेष्टा की थी? क्या मैंने कभी राष्ट्र की प्रतिष्ठा पर धब्बा लगाया है?

मालवजी – महाराज! यह सब कुछ नहीं।

शिवाजी – फिर तुम्हारे मन में क्या बात थी?

मालवजी – यदि आप पूछते ही हैं तो सुनिए। मेरे पिता आपकी सेना में सिपाही थे। उन्होंने देश की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। आज उनको मरे हुए दो वर्ष हो गए। इस समय घर में मैं और मेरी माता, केवल दो प्राणी हैं। आज तीन महीनों से हम दोनों को पेट-भर अन्न मिलना दूभर हो गया है। इस संसार में मनुष्य सब कुछ सहन कर लेता है, परन्तु पेट की भूख सहन नहीं कर सकता। मैं इसी विचार में बैठा था कि एक सैनिक ने आकर मुझसे कहा कि यदि

तुम शिवाजी का वध कर दो, तो मैं तुम्हें धन दूँगा। महाराज! इसी लालच में पड़कर मैं आपकी हत्या करने के लिए यहाँ आया था। किन्तु अचानक उसी समय आपकी आँखें खुल गईं।

शिवाजी – जब तुम्हें इतना कष्ट था, तब तुम मेरे पास क्यों नहीं आए?

मालवजी – महाराज! मेरे आने की क्या आवश्यकता थी? जिस वीर सैनिक ने देश की रक्षा के लिए अपने प्राण गँवा दिए उसके परिवार के पालन-पोषण की चिन्ता करना तो आपका ही कर्तव्य था।

(बालक की निडरता को मन ही मन सराहते हुए दिखावटी रोष से)

शिवाजी – तानाजी, इस बालक को ले जा कर जेलखाने में बन्द कर दो। कल इसे मृत्यु-दंड दिया जाएगा।

मालवजी – मृत्यु-दंड पाने से पहले एक बात की भीख माँगता हूँ।

शिवाजी – वह क्या?

मालवजी – मरने से पहले मैं अपनी पूजनीय माता का एक बार दर्शन करना चाहता हूँ।

शिवाजी – यदि तुम अपनी माता के दर्शन करके न लौटे तो?

मालवजी – मैं वीर पुत्र हूँ। झूठ बोल कर मृत्यु से बचना नहीं चाहता। प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं माता के दर्शन करके अवश्य जल्दी लौट आऊँगा।

शिवाजी – (बालक की वीरता की मन ही मन सराहना करते हुए) अच्छा जाओ। यही देखना है। (मालवजी का प्रस्थान)।

शिवाजी – ओह! इस बालक में वीरता फूट-फूट कर भरी है। साथ ही यह अपनी माता का भक्त भी है। ऐसे ही बालक अपने माता-पिता की लाज रखते हैं। तानाजी तुम्हारी क्या राय है?

तानाजी – महाराज, आप क्या कहते हैं? मैं तो इसकी वीरता और साहस पर मुग्ध हूँ।

शिवाजी – तानाजी! जानते हो, मैं इस बालक के साथ क्या व्यवहार करूँगा।

तानाजी – नहीं महाराज।

शिवाजी – मैं इसकी परीक्षा लेने के पश्चात् इसे मृत्यु-दंड से मुक्त करके अपनी सेना में भरती करूँगा। मेरा विश्वास है कि मातृभूमि की सेवा में यह बालक कोई कसर नहीं रखेगा।

तानाजी – घातक के साथ इतनी दया! धन्य हैं!

शिवाजी – तानाजी, मारनेवाले से बचाने वाले में अधिक शक्ति होती है। आज तुमने हमारी जान बचाई। इसलिए मैं तुम्हारा आभारी रहूँगा।

तानाजी – महाराज, आप यह क्या कहते हैं! मैं तो आपका दास हूँ। स्वामी की रक्षा करना दास का कर्तव्य है। इसमें आभारी होने की क्या बात है?

शिवाजी – तानाजी, तुम धन्य हो! तुम्हारे ही जैसे सेनानायकों पर भारतमाता गर्व करती है। अच्छा, थोड़ी देर विश्राम करो।

तानाजी – (प्रणाम करता है) जो आज्ञा महाराज! (प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

[**स्थान :** शिवाजी के दुर्ग का कमरा। दोपहर का समय]

शिवाजी – (तानाजी की ओर मुँह फेर कर) तानाजी न जाने क्यों मेरे हृदय में उस बालक के प्रति अगाध प्रेम उमड़ रहा है। जब से वह मेरे सामने से गया है, तब से मैं उसी के बारे में सोच रहा हूँ।

तानाजी – महाराज, यह उसकी वीरता और साहस का फल है।

शिवाजी – तुम सच कहते हो। मैं उसकी वीरता पर मुग्ध हूँ। इतनी छोटी अवस्था और इतना साहस! जिस शिवाजी के नाम से मुगल-सेना काँपती है, उसके सामने एक बालक का इतना साहस!

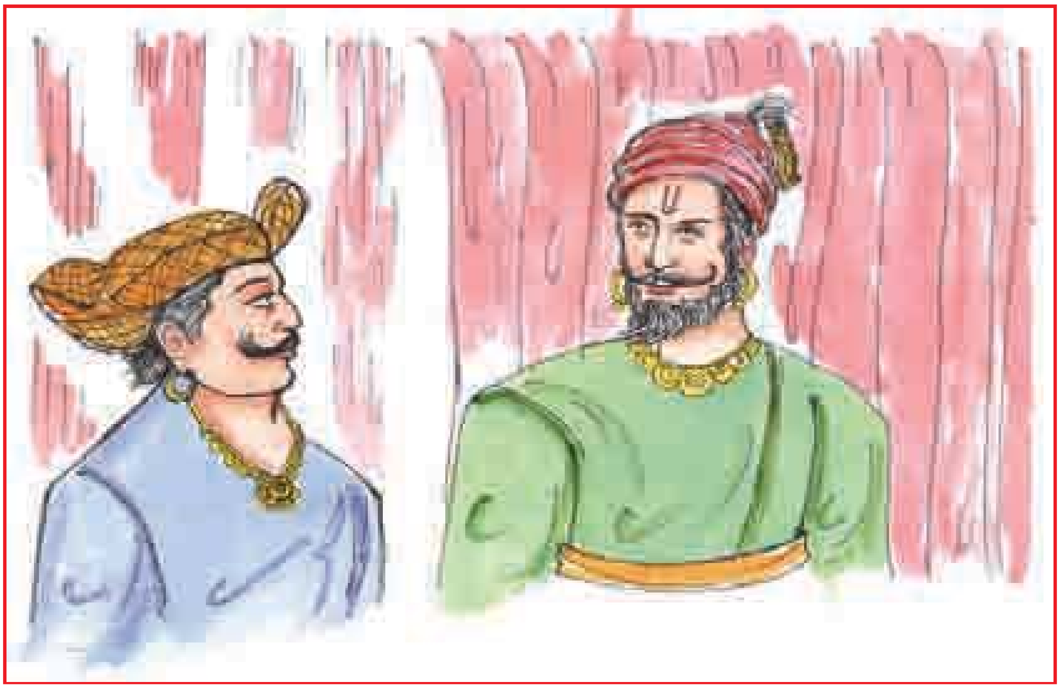

तानाजी – इसमें भी क्या कोई सन्देह है?

दरबान – (प्रवेश कर) महाराज, एक बालक आप से मिलना चाहता है।

शिवाजी – उसे बुला लाओ।

(दरबान के साथ मालवजी का प्रवेश)

मालवजी – महाराज, आपका अपराधी मृत्यु-दंड पाने के लिए प्रस्तुत है।

शिवाजी – वीर-पुत्र तुम इतनी जल्दी कैसे आ गए?

मालवजी – महाराज, आपसे विदा होकर मैं घर पहुँचा। माता बड़ी देर से मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। देखते ही उसने मुझे छाती से लगा लिया। उस समय मैंने सोचा कि मैं उससे सारा भेद कह दूँ परन्तु मेरी हिम्मत न पड़ी। अब मैं आपकी सेवा में उपस्थित हूँ। आप जो चाहें कर सकते हैं। परन्तु मरने से पहले मैं एक बात और माँगता हूँ।

शिवाजी – कहो, वह कौन सी बात है?

मालवजी – मेरी माँ की देखरेख का समस्त भार आप अपने ऊपर ले लीजिए।

शिवाजी – वीर पुत्र, तुम सचमुच क्षत्रियपुत्र हो। शिवाजी वीरों का आदर करता है, उनकी हत्या नहीं करता। अब तक मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। वत्स, तुम मेरी परीक्षा में सफल हुए। मैं तुम्हारा अपराध क्षमा करता हूँ।

मालवजी – (शिवाजी के पैरों में गिर कर) आप धन्य हैं।

शिवाजी – (मालवजी को छाती से लगाकर) वीर पुत्र जिस प्रकार तुम अपनी माता के दु:ख से दु:खी होकर व्याकुल हो रहे हो, उसी प्रकार मैं भी दु:खी हूँ। रात-दिन मैं इसी चिंता में रहता हूँ कि किस प्रकार भारत-माता का दु:ख दूर करूँ।

मालवजी – महाराज, यह शरीर आपका है। आपने मुझे जीवन दान दिया है। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक इस शरीर में जान है, मैं कभी मातृभूमि की सेवा से पीछे न हटूँगा।

शिवाजी – वीर-पुत्र! मैं तुमसे यही आशा करता हूँ।

शब्दार्थ

तत्पर तैयार **कष्ट** दु:ख **कर्तव्य** फ़र्ज़ **मुग्ध** मोहित **पर्याप्त** काफ़ी **वत्स** बालक **दूभर** कठिन **दायित्व** जिम्मेदारी **प्रतिष्ठा** सम्मान **चेष्टा** प्रयत्न **अगाध** गहरा, अपार

मुहावरे

प्राण न्योछावर करना जीवन समर्पित करना **वध करना** हत्या करना, मार डालना **हिम्मत न पड़ना** बात न कर सकना **जीवन दान देना** जिंदा जाने देना

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए :

(1) मालवजी शिवाजी का वध करने के लिए क्यों तैयार हो गया?

(2) अपनी हत्या के बारे में शिवाजी ने कौन-कौन सी शंकाएँ व्यक्त की?

(3) तुम इस एकांकी को और कौन-सा शीर्षक देना चाहोगे?

(4) शिवाजी बालक को सेना में क्यों भर्ती करना चाहते थे?

(5) बालक अपनी माँ का पालन-पोषण करने की जिम्मेदारी शिवाजी को क्यों सौंपता है?

प्रश्न 2. अंदाज अपना-अपना :

देश की रक्षा के लिए लड़नेवाला सैनिक युद्ध में आहत हुआ है, वह अंतिम साँसें ले रहा है - वह क्या सोचता होगा? बताइए।

प्रश्न 3. नीचे दिए गए शब्द इकाई के जिन-जिन वाक्यों में प्रयोग हुआ हो, उन वाक्यों को पढ़िए :

(1) दृष्टि	(2) सत्यवादी	(3) प्रतिष्ठा	(4) न्योछावर	(5) दर्शन
(6) झूठ	(7) विश्वास	(8) मुग्ध	(9) चिंता	(10) हटूँगा

प्रश्न 4. इस एकांकी का नाट्यीकरण कीजिए।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) मालवजी शिवाजी का वध करने के कौन से दो कारण बताता है?

(2) कष्ट होने पर भी मालवजी शिवाजी के पास क्यों नहीं गये?

(3) मृत्युदंड के पहले बालक ने कौन-सी भीख माँगी?

(4) शिवाजी बालक की परीक्षा लेने के बाद क्या करना चाहते थे?

प्रश्न 2. निम्नलिखित उक्ति कौन, किसे कहता है - लिखिए :

(1) 'जब तुम्हें इतना कष्ट था, तब तुम मेरे पास क्यों नहीं आये?'

(2) 'मरने से पहले मैं अपनी पूजनीय माता का एक बार दर्शन करना चाहता हूँ।'

(3) 'मैं तो इसकी वीरता और साहस पर मुग्ध हूँ।'

(4) 'तुम्हारे ही जैसे सेनानायकों पर भारत माता गर्व करती है।'

(5) 'महाराज, एक बालक आप से मिलना चाहता है।'

(6) 'मैं तुमसे यही आशा करता हूँ।'

(7) 'महाराज, यह शरीर आपका है।'

प्रश्न 3. निम्नलिखित परिच्छेद का मातृभाषा में अनुवाद कीजिए :

पुत्र, जिस प्रकार तुम अपनी माता के दु:ख से दु:खी होकर व्याकुल हो रहे हो, उसी प्रकार मैं भी दु:खी हूँ। रात-दिन मैं इसी चिंता में रहता हूँ कि किस प्रकार भारतमाता का दु:ख दूर करूँ।

महाराज, यह शरीर आपका है। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक इस शरीर में जान है, मैं कभी मातृभूमि की सेवा से पीछे न हटूँगा।

प्रश्न 4. उदाहरण आधारित नीचे दिए गए शब्दों को उचित क्रम में रखकर अर्थपूर्ण वाक्य बनाइए :

उदाहरण : छोड़कर, पीसने, अपना, बापू, लगे, काम, आटा

वाक्य : बापू अपना काम छोड़कर आटा पीसने लगे।

(1) देखते, दृष्टि, से, प्रेम, शिवाजी, और, उसकी, रहे।

(2) बात, सत्य है, जो, उसे, अवश्य, बता, मैं, दूँगा।

(3) क्या, तुम्हारे, फिर, मन में, बात, थी?

(4) प्राण, न्योछावर, अपने, देश की, लिए, रक्षा के, उन्होंने, कर, दिए।

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण छाँटकर उनके भेद लिखिए :

(1) परिश्रमी छात्र कभी असफल नहीं होते।

(2) अब्दुल बीस किलो आटा लाया।

(3) राम ने पाँच मीटर कपड़ा खरीदा।

(4) पचीस छात्रों ने सही उत्तर दिए।

(5) दीपावली पर हमने बहुत मिठाई खरीदी।

(6) रेश्मा के पास तीन किताबें हैं।

(7) कुछ लड़के बगीचे में खेल रहे हैं।

(8) माँ ने चाय में थोड़ा दूध डाला।

(9) वे लड़के शोर मचा रहे हैं।

(10) आप किस आदमी की बात कर रहे हैं?

योग्यता विस्तार

- देश के स्वातंत्र्य संग्राम में अपना योगदान देनेवाले कम से कम दस देशभक्तों का परिचय प्राप्त कीजिए।
- गाँधी जी, सरदार पटेल और शहीद भगतसिंह जैसे देशनेताओं के जीवन पर आधारित फिल्म या धारावाहिक देखिए।

◆